Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

केन्द्रीय संग्रहालय इन्दौर
की
संक्षिप्त मार्ग-प्रदर्शिका

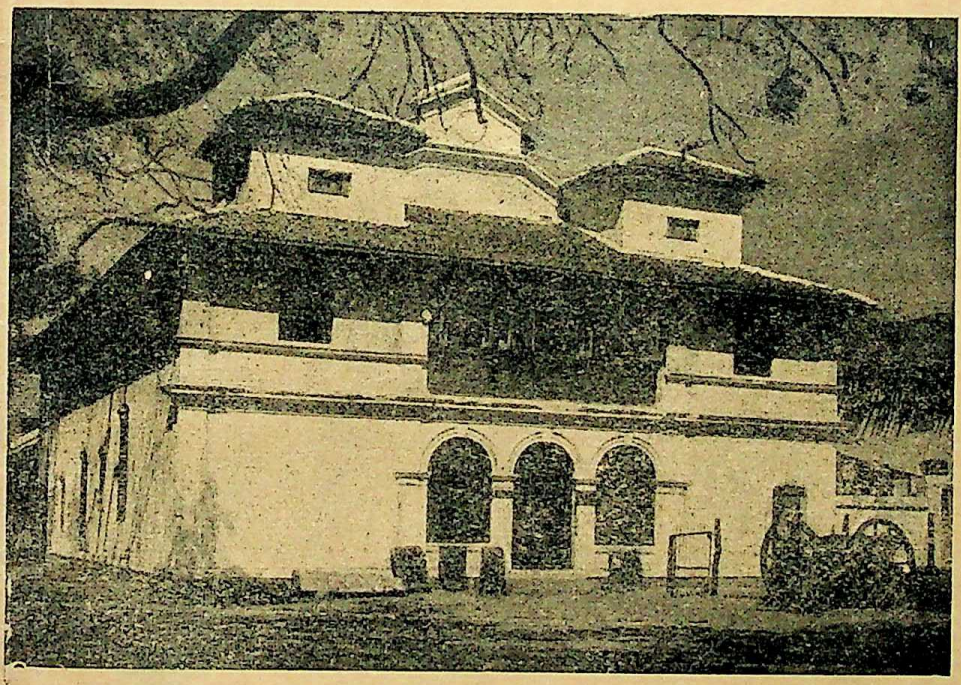

पुस्तकालय पुस्तकालय, लखनऊ
क्रमसंख्या 1890
प्राप्ति तिथि 2.5.64
State Museum, Library, Lko.

1890

पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग
मध्यप्रदेश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

gitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IK

STATE MUSEUM, LUCKNOW
LIBRARY
Acc. No.
Book No.

केन्द्रीय अनुदान सन १९६०–६१ के अन्तर्गत प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

708.9

केन्द्रीय संग्रहालय इन्दौर की संक्षिप्त

मार्ग-प्रदर्शिका

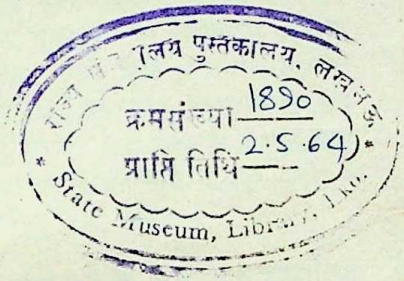

लेखक

प्रभाकर गोविन्द परांजपे, एम. ए.,

संग्रहाध्यक्ष

प्रकाशक

पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, मध्यप्रदेश

१९६१

कीमत एक रुपया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

निवेदन

केन्द्रीय संग्रहालय, इन्दौर की संक्षिप्त मार्ग-प्रदर्शिका पाठकों के सम्मुख रखते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है। प्रस्तुत मार्ग-प्रदर्शिका के लिखने में मुझे डॉ. हरिहर विठ्ठल त्रिवेदी, उप-संचालक, पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, मध्यप्रदेश से जो अमूल्य मार्ग-दर्शन मिला उसके लिये मैं उनका आभारी हूं। मेरे दो सहयोगी श्री राम सेवक गर्ग तथा एम. आर. करजगिर ने मुझे इस कार्य में अत्यन्त सहायता दी जिसके लिये मैं इन्हें धन्यवाद देता हूं अन्त में शासकीय मुद्रणालय, इंदौर के अधिकारी एवं कर्मचारियों नें अल्प समय में मुद्रण कार्य उत्तम किया उसके लिये मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं.

यह मेरा प्रथम प्रयास है अतः हो सकता है कि इसमें कुछ त्रुटियां रह गई हों। पाठकों से निवेदन है कि वे त्रुटियों से मुझे अवगत करावें तथा अनुग्रहित करें।

प्रभाकर गोविन्द परांजपे
संग्रहाध्यक्ष

मार्च, १९६१
शक सम्वत् १८८३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

प्रमुख तिथियां

१. भगवान बुद्ध ई. पू. ६२३ से ई. पू. ५४३

२. महावीर स्वामी ई. पू. ५९९ से ई. प. ५२७

३. मौर्यकाल ई. पू. ३२० से ई. पू. १८५

४. शुंगकाल ई. पू. १८५ से ई. पू. ७३

५. शक एवं कुषाणकाल ई. पू. ७० से ३२० ई

६. गुप्तकाल ३२० ई. से ६०० ई.

७. पूर्व मध्यकाल ६०० ई. से ९०० ई.

८. उत्तर मध्यकाल ९०० ई. से १२०० ई.

915.954

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate I

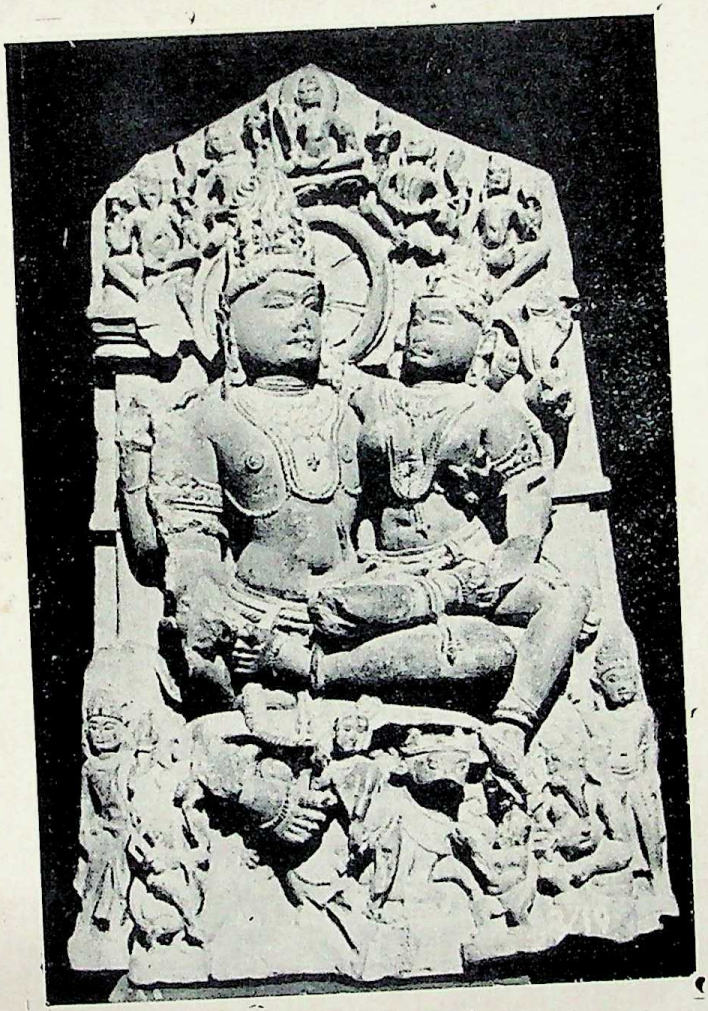

उमा-महेश्वर (भानपुरा)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate II

उमा-महेश्वर (आवरा)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate III

किरात शिव (मोड़ी)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate IV

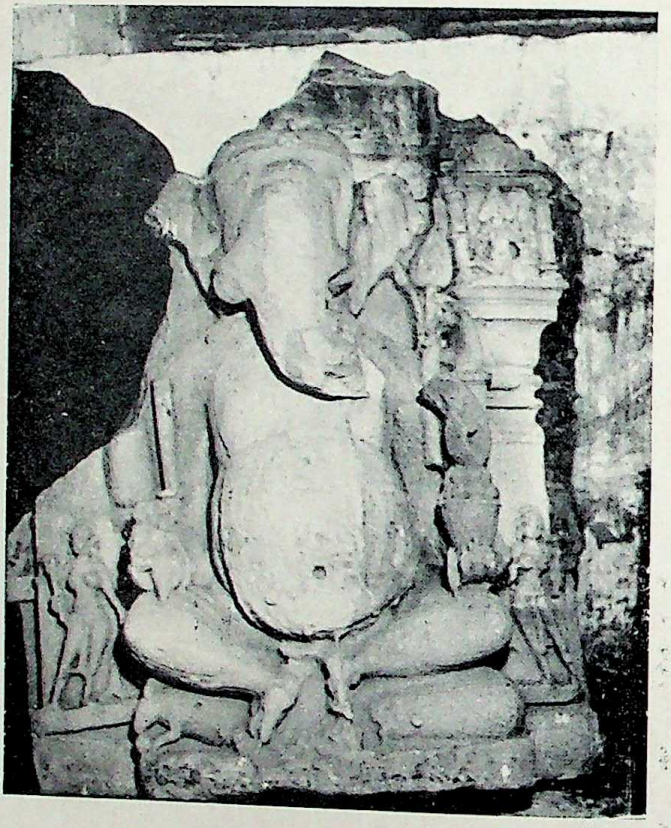

गणेश (काटकूट)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate V

नृत्य करते हुवे गणेश (भानपुरा)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate VI

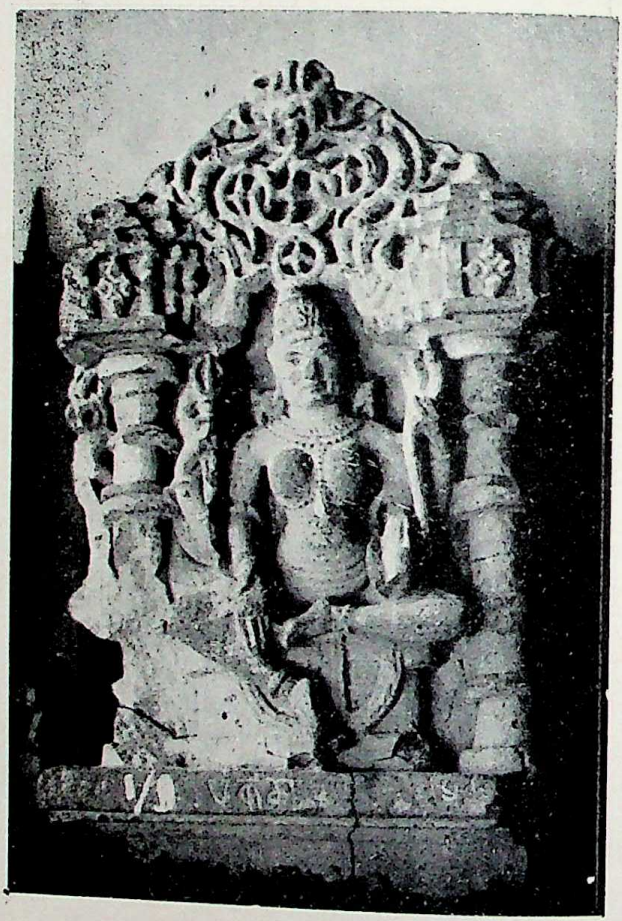

पार्वती (ऊन)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate VII

अनंतशायी नारायण (मातातेड़ा)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate VIII

रथारुढ़ सूर्य (देपालपुर)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

केन्द्रीय संग्रहालय इन्दौर

केन्द्रीय संग्रहालय इन्दौर की स्थापना १ अक्टूबर, सन् १९२९ ई. को तत्कालीन होलकर राज्य में यत्र तत्र बिखरी हुई पुरातत्व सम्बन्धी वस्तुओं को इकत्र करने तथा संग्रह करने के उद्देश्य से की गई थी। कालान्तर में जनरुचि की वस्तुओं को भी इसमें स्थान मिलता गया।

संग्रहालय प्रातः ७ से १० तथा मध्यान्ह ३ से ६ (अप्रेल से अक्टूबर) एवं ८ से ११ तथा २ से ५ बजे तक (नवम्बर से मार्च) प्रेक्षकों के लिए खुला रहता है। मध्यप्रदेश शासन द्वारा घोषित अवकाश पर भी संग्रहालय बंद रहता है।

संग्रहालय में रखी हुई वस्तुओं को कुल ६ (छः) भागों में विभाजित किया गया है।

(१) पुरातत्व
(२) ललितकला
(३) प्राणि शास्त्र,
(४) नृवंश विद्या,
(५) उद्योग एवं व्यापार, तथा
(६) शिक्षा।

पुरातत्व विभाग

संग्रहालय के पुरातत्व विभाग को पुनः (अ) तक्षण कृतियां, (ब) मुद्रा, (स) अभिलेख, (द) मृत्तिका पात्र, तथा (क) शस्त्रास्त्र, उप विभागों में विभक्त किया गया है।

(अ) तक्षण दीर्घा.—संग्रहालय की तक्षण दीर्घा बहुमूल्य वस्तुओं से पूर्ण है। इसके अन्तर्गत ब्राह्मण तथा जैन धर्मों की प्रस्तर एवं धातु प्रतिमाएं आती हैं। इन मूर्तियों को भूतपूर्व होलकर राज्य के विभिन्न स्थानों से लाया गया है। संग्रहालय में संग्रहीत अधिकांश मूर्तियां परमार कालीन (लगभग ९०० से १३०० ई.) हैं। कुछ प्रतिमाएं उत्तर गुप्त काल की भी हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

संग्रहालय की शैव मूर्तियों में उमा-महेश्वर, योगीश्वर शिव, किरात शिव तथा तपस्विनी पार्वती एवं अन्य मूर्तियां हैं। उमा-महेश्वर प्रतिमाओं में शिव को चतुर्भुज एवं पार्वती को दो भुजाओं से युक्त बतलाया गया है। उमा-महेश्वर की कुछ मूर्तियों में सम्पूर्ण शिव परिवार उत्कीर्ण है। मन्दसौर जिले के भानपुरा नामक स्थान से प्राप्त उमा-महेश्वर की मूर्ति अत्यन्त आकर्षक है। मूर्ति २' – १०" ऊंची तथा १' – ६" चौड़ी है। इस मूर्ति में पार्वती को भगवान शिव के साथ सिंहासन पर बैठा हुआ दिखलाया गया है। देवी पार्वती शिव के वाम अंक पर बैठी हुई हैं। सिंहासन के नीचे वाहन नंदी तथा दो गण हैं। मूर्ति के दाहिनी ओर स्वामी कार्तिकेय अपने वाहन मयूर पर विराजमान हैं तथा इनके पीछे त्रिशूल से युक्त एक गण है। मूर्ति के बांई ओर गणेशजी बैठे हुए हैं। इनके पीछे भी एक गण को त्रिशूल से युक्त उत्कीर्ण किया गया है। इसी स्थान से शिव-पार्वती की एक खड़ी प्रतिमा भी (२' – १" × १' – ६") प्राप्त हुई है। शिव के तीन हाथ इसमें स्पष्ट रूप से दिखलाई देते हैं। एक हाथ स्वयं के वक्षःस्थल पर है तथा दूसरा पार्वती के स्तनों के नीचे सहारा दे रहा है। तीसरे हाथ में एक सर्प है। पार्वती के स्तनों के नीचे का भाग खण्डित हो गया है। दोनों ने अनेकों अलंकारों को धारण कर रखा है। इसी जिले के आवरा नामक स्थान से प्राप्त उमा-महेश्वर की दो मूर्तियों में गणेश, नृत्य करते हुये भृंगी एवं कार्तिकेय को बड़े ही आकर्षक ढंग से दिखलाया गया है। यह दोनों मूर्तियां आठवी शताब्दी की हैं। प्रत्येक मूर्ति २'–६" लम्बी एवं १'–९" चौड़ी है।

योगीश्वर शिव की प्रतिमा (२'–७" × २') देवास जिले के बिजवाड़ नामक स्थान से लाई गई है। वितान के नीचे जटाधारी शिव पद्मासन पर आसीन हैं। कानों में कुण्डल तथा यज्ञोपवीत धारण किये हुये हैं। वक्षःस्थल पर श्रीवत्स चिन्ह अंकित है। इस मूर्ति में ब्राम्हण तथा जैन धर्मों के चिन्ह स्पष्ट रूप से लक्षित होते हैं। तक्षक ने इस मूर्ति में यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि बारहवीं शताब्दी में ब्राह्मण तथा जैन सम्प्रदायों में उत्तम सम्बन्ध रहे होंगे।

मन्दसौर जिले के मोड़ी नामक स्थान से प्राप्त प्रतिमा में भगवान शिव को सरसंधान करते हुवे दिखलाया गया है। शिव की अष्ट भुजाओं में से छः स्पष्ट दिखलाई दे रही हैं। ऊपर के दो हाथों में ढाल एवं धनुष है। मध्य के दो हाथों में तलवार एवं त्रिशूल है। नीचे का बांयां हाथ अभय मुद्रा में है एवं दाहिना हाथ प्रत्यंचा को (४' – ५" × १' –२") खींच रहा है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

निमाड़ (खरगौन) जिले के काटकूट नामक स्थान से प्राप्त (४'–३" × ३'–१") गणेश को उनके वाहन मूसक के साथ दिखलाया है। मूर्ति के बांये आले पर चतुर्भुज ब्रह्माणी को तीन मुखों से युक्त दिखलाया गया है। नृत्य करते हुये गणपति (१'–८" × १'–५") इन्दौर जिले के मानपुर नामक स्थान से प्राप्त हुये हैं।

संग्रहालय में रखी हुई भैरव की मूर्तियां आठवीं से लेकर सोलहवीं शताब्दी तक की हैं। द्वादश भुजाओं से युक्त भैरव की मूर्ति मोड़ी नामक स्थान से प्राप्त हुई है। यह मूर्ति ४'–४" लम्बी एवं २' चौड़ी है। इसे बारहवीं शताब्दी का माना जाता है।

निमाड़ (खरगोन) जिले के ऊन नामक स्थान से प्राप्त तपस्विनी पार्वती की मूर्ति अत्यन्त आकर्षक है। चार भुजाओं से युक्त देवी सिंहासन पर आसीन हैं तथा ऊपर के दोनों हाथों में क्रमशः त्रिशूल और सर्प धारण किये हुए हैं। नीचे के दोनों हाथ उनकी वरद् तथा अभय मुद्रा को आभासित करते हैं। दो आधार स्तम्भों पर आधारित नागफन देवी की प्रतिमा पर वितान सदृश्य है। आसन पर बारहवीं शताब्दी की देवनागरी वर्णमाला में 'एकम' शब्द उत्कीर्ण है।

संग्रहालय में इनके अतिरिक्त देवी चामुण्डा, कात्यायनी, महिषासुरमर्दिनी, कामधेनु, सप्तमात्रिका, सरस्वती, ब्रह्मदेव, यम, कुबेर हनुमान तथा क्षेत्रपाल की प्रतिमाएं भी हैं जो अत्यन्त ही चित्ताकर्षक हैं।

संग्रहालय में विष्णु की मूर्तियां अपेक्षाकृत वृहताकार है। विष्णु की विशाल प्रतिमा जो ऊन नामक स्थान से मिली है प्रारम्भिक परमार काल की मानी जाती है। विष्णु की वराह अवतार की मूर्तियां दो प्रकार की हैं– (१) नरवराह तथा (२) पशुवराह। नरवराह में विष्णु को मानवाकृति में तथा वराह के सिर सहित बांये पैर से शेषनाग को दबाते हुवे दिखलाया गया है। मूर्ति के बांयें हाथ में गदा है तथा दाहिना हाथ प्रजान्हु पर सहारा ले रहा है। प्रतिमा निमाड़ जिले के ऊन नामक स्थान से प्राप्त की गई है एवं आकार में २'–६" × १'–४" है। पशु वराह की मूर्ति में सर्वत्र शरीर में क्रमवत् पंक्तियों के मध्य आठों दिक्पाल एवं नवग्रहों की सुन्दर लघु प्रतिमाएं उत्कीर्ण है। इसे मंदसौर जिले के बूंजर नामक गांव से प्राप्त किया गया है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

इसी स्थान से लक्ष्मीनारायण की मूर्ति (४'–६" × २'–३") भी प्राप्त हुई है। इसमें भगवान विष्णु अपने वाहन गरुड पर आसीन ह तथा वाम अंक पर लक्ष्मीजी विराजमान हैं। मूर्ति के वितान में विष्णु के दस अवतार वराह, कलकी, बुद्ध, कृष्ण, राम, परशुराम, वामन, नृसिंह, कच्छ तथा मत्स्य को बड़ ही सुन्दर ढंग से उत्कीर्ण किया गया है। इसी जिले के मालाहेड़ा नामक स्थान से प्राप्त अनन्तशायी नारायण की मूर्ति भी बड़ी सुन्दर है। इसमें भगवान विष्णु शेष शैय्या पर लेटे हुये हैं। शेषनाग का फण टूटा हुआ है। लक्ष्मी की प्रतिमा जो कि विष्णु के पैरों के पास है टूट चुकी है एवं उसके पैर मात्र ही अवशेष रह गये हैं। दाहिने तथा बांये कोनों पर क्रमशः ब्रह्मा तथा शिव की मूर्तियां हैं। तथा उनके बीच में रासलीला अत्याधिक सौन्दर्य के साथ उत्कीर्ण की गई है। देवास जिले के नेमावर नामक स्थान से प्राप्त २'–२" × २'–१" के आकार की योगनारायण की मूर्ति में भगवान विष्णु को ध्यानावस्थित मुद्रा में उत्कीर्ण किया गया है।

इन्दौर जिले के देपालपुर नामक स्थान से प्राप्त रथारूढ़ सूर्यदेव की प्रतिमा में आभामय मुखमण्डल को सुन्दरता के साथ निर्मित किया गया है, जिसमें से प्रभा रश्मियां सर्वत्र फैलती हुई दर्शायी गई हैं। सप्तमुखी अश्व रथ से जुड़ा हुआ है और सारथि अरुण अपने स्थान पर बैठे हैं। प्रतिमा का आकार ३'–८" × २'–५" है। मन्दसौर जिले के झाड़ोल नामक स्थान से प्राप्त सूर्य की प्रतिमा में मूर्तिकला के सम्पूर्ण लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। मूर्ति को उत्तर गुप्त काल की माना जा सकता है। सूर्यनारायण की चतुर्भुज प्रतिमा जो आकार में २'–५" × १'–७½" है मोड़ी से प्राप्त हुई है। बैठी हुई सूर्यदेव की यह प्रतिमा अत्यन्त चित्ताकर्षक है। इसमें वे ऊपर के दोनों हाथों में विकसित कमल तथा नीचे के दाहिने हाथ में शंख तथा बांए में चक्र धारण किये हुये हैं। इस प्रकार भगवान विष्णु तथा सूर्यदेव दोनों के चिन्ह इस तक्षण कृति में विद्यमान हैं।

मन्दसौर जिले के चन्दवासा नामक स्थान से प्राप्त दशवीं शताब्दी के शिव मंदिर का दरवाजा मध्यकालीन कला का एक प्रमुख उदाहरण है। उड़ते हुये गंधर्व तथा अप्सराओं के युग्म, दशो दिक्पाल, तथा भगवान शिव के अर्धनारीश्वर, नटराज और हरिहर रूप बड़े ही कलात्मक ढंग से उत्कीर्ण किये गये हैं। दो स्तम्भों पर गंगा तथा यमुना की आकृतियों को उनके वाहन मकर तथा कच्छप के साथ दिखलाया गया है। इसे भव्य आकृतियों तथा सुन्दर चिन्हों से पूर्णरूपेण सजाया भी गया है। इन्दौर से प्राप्त मंदिर द्वार के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

चौखट का एक उत्कीर्ण भाग भी अत्यन्त ही चित्ताकर्षक है। इसमें तीन आले हैं जो क्रमशः एक दूसरे के ऊपर परस्पर आधारित हैं। सबसे ऊपरवाले आले में सम्भवतः त्रिमुखी ब्रह्माणी की मूर्ति है। मध्य आले में बैठे हुये देवता के भी चार हाथ हैं। उनके एक हाथ में पाश है और सम्भवतः यह यम की मूर्ति हो सकती है। नीचेवाले आले में दोनों हाथों में कुछ चीज लिए हुये एक खड़ी पुरुषाकृति मूर्ति है। इसका एक पैर टूटा हुआ है। मध्यवाले आले की दायीं ओर एक हाथी का अग्र भाग दिखाई दे रहा है एवं उसके मस्तक पर खुले मुंहवाला सिंह, जिसके पीछे के पैर दिखलाई नहीं देते और जिसने अपने आगे के पैरों को थोड़ा सा मोड़ रखा है, बड़े सुन्दर ढंग से दिखलाया गया है। हाथी के नीचे बैठी हुई एक चतुर्भुजी प्रतिमा है तथा पुनः इसके नीचे खड़ी हुई कोई स्त्री मूर्ति उत्कीर्ण है।

संग्रहालय की जैन मूर्तियाँ ब्राह्मण मूर्तियों की भांति विविध प्रकार की नहीं हैं और बहुधा उनमें लेख भी उत्कीर्ण हैं जिनके कारण उनका निर्माण काल जानने में सहायता मिलती है। संग्रहालय में संग्रहीत जैन मूर्तियों में–तीर्थंकरों में आदिनाथ, श्रेयान्सनाथ, धर्मनाथ, शांतिनाथ, नेमिनाथ, नमिनाथ, पार्श्वनाथ तथा महावीर स्वामी की प्रतिमाएं हैं। प्रमुख चित्ताकर्षक जैन तक्षण कृतियों में मोड़ी से प्राप्त १'–४" × १' के आकार का कल्प वृक्ष है। इसी स्थान से प्राप्त एक सुन्दर पदक में अश्वारूढ़ यक्षिणी मनोवेगा को मनमोहक रूप से उत्कीर्ण किया गया है। संग्रहालय में तीर्थंकर प्रतिमाओं के कुछ मस्तक, मूर्तियों के वितान तथा आसन दर्शनीय हैं। एक अन्य चित्ताकर्षक तक्षणकृति में एक वृक्ष के नीचे पुरुष तथा स्त्री मूर्तियों को दिखाया गया है। इस युग्म प्रतिमा के ऊपर बैठे हुए एक तीर्थंकर की मूर्ति है। ३'–४" × ८" आकार की श्रुतदेवी की खड़ी मूर्ति भी एक सुन्दर तक्षण कृति है। इसमें प्रतिमा के सिर के ऊपर तीन तीर्थंकरों की लघु प्रतिमाएं हैं।

यद्यपि बुद्ध मूर्तियाँ, चित्रकला तथा अन्य अवशेष-धमतार, पोला डोंगर तथा बाघ गुफाओं में प्राप्त हैं। परन्तु राज्य में स्वतंत्र रूप से कोई बुद्ध प्रतिमा प्राप्त नहीं हुई। कसरावद में भी कोई बुद्ध प्रतिमा नहीं मिली है। संग्रहालय में संग्रहीत बोध गया से खरीदी हुई भगवान बुद्ध की पाषाण मूर्ति दर्शनीय है।

संग्रहालय में एकतालिस धातु मूर्तियां भी हैं। उनमें से सब से चित्ताकर्षक मूर्ति जैन श्रुत देवी की है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

जनरुचि के लिए मथुरा शैली में बनी हुई एवं आंग्ल संग्रहालय, लन्दन में रखी हुई 'सिंह मस्तक' की ढली हुई आकृति भी संग्रहालय में दर्शनीय है।

(ब) मुद्राकक्ष.—इस कक्ष में लगभग तीन हजार मुद्राएं है जिनमें से एकतालीस सुवर्ण मुद्राएं तथा शेष रजत एवं ताम्र अथमा मिश्रित धातु की हैं। इन मुद्राओं को कई प्रकार से प्राप्त किया गया है। कुछ को भूतपुर्व होलकर राज्य के ट्रेझर ट्रोव्ह अधिनियम १९२८ के कारण प्राप्त किया गया है। क्रय तथा भेंट द्वारा भी कुछ मुद्राएं संग्रहीत की गई हैं। समस्त संग्रह को चार उपविभागों में विभक्त किया गया है—(१) प्राचीन (२) मध्य (३) वर्तमान तथा (४) विदेशी।

प्राचीन मुद्राओं में चिन्हाकित मुद्राएं तथा उज्जैन चिन्ह से युक्त ढली हुई रजत एवं ताम्र मुद्राएं हैं। यवन, शक, कुशाण, सातवाहन, क्षत्रय, गुप्त, नाग, कलचुरी, इण्डोससानियन, नपकी-मलिक, हर्षवर्धन, गधय्या, गुर्जर प्रतिहार, सामन्तदेव (ओहिन्द) गोविन्दचन्द्र गहड़वाल तथा यादवों की रामटंका एवं विजयनगर की मुद्राऐं भी संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

मध्ययुगीन मुद्राओं में वृषभ एवं अश्वारोही प्रकार की मुद्राएं, गुलाम वंश के शासकों की मुद्राएं, मुहम्मद बिन-साम, अलाउद्दीन खिलजी, मुबारक शाह (तुगलक वंश) जौनपुर, मालवा, गुजरात तथा गुलबर्गा के बहमनी राज्यों की मुद्राओं के साथ-साथ मुगल बादशाह हुमायूं से बहादुरशाह द्वितीय तक एवं फारस के सुलतान नादिरशाह, अहमदशाह अब्दाली, हैदरअली, टीपू सुलतान, छत्रपति शिवाजी, पेशवा, झांसी, बिजवाड और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सिक्के विशेष उल्लेखनीय हैं।

अर्वाचीन मुद्राओं के अन्तर्गत हैदराबाद, भोपाल, जूनागढ़, जावरा, टोंक, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, बून्दी, डूंगरपुर, झालावाड़, कच्छ, भवालपुर, रतलाम, सीतामऊ, प्रतापगढ़, ग्वालियर, बड़ौदा, इंदौर, धार तथा देवास की मुद्राएं संग्रहालय के मुद्रा कक्ष में हैं।

संग्रहालय में कुछ विदेशी मुद्राएं भी हैं। उनमें से इंग्लैंड, फ्रांस, हॉलैंड, आस्ट्रिया, पुर्तगाल, टर्की, मिश्र, ईरान, पूर्वीय ब्रिटिश--अफ्रीका, लंका, नेपाल, जापान, चीन, हांगकांग, सिंगापुर, नेदरलैन्डस तथा एरिट्रिया की मुद्राएं हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

संग्रहालय में कुछ प्रमुख मुद्राएँ ही दिखलाई जाती हैं। स्वर्ण मुद्राओं तथा कुछ अन्य मुद्राओं की सुरक्षा की दृष्टि से उनको संग्रहालय के स्ट्रॉंग रूम में रख दिया गया है।

निम्नांकित इण्डोग्रीक शासकों की श्वेत मिट्टी में ढली हुई मुद्राओं को भी जनरूचि के लिए दिखलाया गया है--

(१) यूकेटाइड्ज,
(२) प्लेटो,
(३) हेलियोक्लीज,
(४) स्टेट्रो,
(५) स्ट्रेटो एवं एगोथोक्लिया,
(६) मेनान्डर (बौद्ध धर्म ग्रंथों का मिलिन्द),
(७) इपेन्डर,
(८) जोलिऑस,
(९) अपोलोफनिज,
(१०) निकिअस।

(स) अभिलेख.– संग्रहालय की अभिलेख दीर्घा में क्रम से पांच शिलालेख एवं पांच ताम्र-पत्र हैं।

शिलालेख

(१) कसरावद शिलालेख.–यह शिलालेख १'-९" × १'-७" आकार के शिलाफलक पर उत्कीर्ण है। यह कसरावद की खुदाई से प्राप्त हुआ है। दुर्भाग्यवश यह अत्याधिक नष्ट हो गया है और जहां तहां केवल दो चार शब्द ही पठनीय हैं।' क स ना ग क म ' ' पु त स ' ' प पु त स ' शब्दों को आसानी से पढ़ा जा सकता है। इसकी भाषा प्राकृत हैं एवं यह प्रथम या द्वितीय शताब्दी ईसापूर्व का है।

(२) मोड़ी शिलालेख.–यह शिलाफलक मन्दसौर जिले के मोड़ी नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। यह कई खण्डों में टूट चुका है। जब प्रथमबार सन् १९१३ में यह शिलालेख स्वर्गीय डॉ. डी. आर. भाण्डारकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

को प्राप्त हुआ था उस समय इसके लगभग चार खण्ड प्राप्त रहे। (विशेष विवरण के लिऐ– "दि प्रोग्रेस रिपोर्ट ऑफ दि आरकेलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया–" वेस्टर्न सर्कल १९१३, पृष्ठ ५६) परन्तु अब इसके केवल दो खण्ड ही सुरक्षित हैं। प्रस्तुत अभिलेख वि. सं. १३१४ का है जिसमें परमार राजा जयवर्मन द्वितीय के राज्य का उल्लेख है। इसे मोड़ी में एक शिवमंदिर के निर्माण के संदर्भ म उत्कीर्ण करवाया गया था।

(३) खड़ावदा शिलालेख.–इस शिलाफलक (५'×२' ५") को मन्दसौर के खड़ावदा नामक स्थान से प्राप्त किया गया है। इसमें सम्पूर्ण लेख छत्तीस पंक्तियों में उत्कीर्ण किया गया है। स्वर्गीय डॉ. डी. आर. भाण्डारकर ने इसे "रॉयल एशियाटिक सोसाइटी" १९०८ ई. की बंबई शाखा की पत्रिका में प्रकाशित किया था। केन्द्रीय संग्रहालय के भूतपूर्व संग्राध्यक्ष प्रोफेसर श्री आर. जी. ओझा ने इसे पुनः आलोचनात्मक ढंग से नागरी प्रचारिणी पत्रिका संस्करण १२ वां में प्रकाशित किया है। सम्वत् १५४१ में माण्डव के सुलतान गयास शाह खिलजी के सेनानी बहड़ी ने इस्लाम को कबूल करने के पश्चात एक कूप का निर्माण किया था उसका इसमें उल्लेख है।

(४) ओखला का शिलालेख.–इसे निमाड़ (खरगौन) जिले के ओखला नामक स्थान से प्राप्त किया गया है। १'–७" वर्गाकार बलुये पत्थर पर यह लेख उत्कीर्ण है जिसमें सम्वत १२८२ में राजा देपालदेव द्वारा एक बावड़ी के निर्माण का उल्लेख है। यह देपालदेव सम्भवतः परमार राजा देवपाल था।

(५) इन्द्रगढ़ शिलालेख.–यह शिलालेख मन्दसौर जिले के इन्द्रगढ़ नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। इसका आकार २'–५" ×१'–७"×२" है तथा इससे प्रमुख राष्ट्रकूट घराने के प्रारम्भिक इतिहास का परिचय मिलता है। वि. सं. ७६७ में नग्प्पा के राज्यकाल में बनवाये गये एक शिवमंदिर का इसमें उल्लेख है। संग्रहालय के भूतपूर्व संग्राध्यक्ष डॉ. एच. व्ही. त्रिवेदी ने 'बिहार अनुसंधान सभा' के एकत्तालीसवें संस्करण की पत्रिका के तृतीय भाग में सन् १९५५ में इसको प्रकाशित किया है।

कुछ जैन प्रतिमाओं के आसनों पर भी उत्कीर्ण कुछ लेख प्राप्त हैं। इनमें से कुछ तीर्थंकर मूर्तियों पर वि. सम्वत् १२२७, १२३२, १२४२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

तथा १२५२ उत्कीण है। इनसे तीर्थंकर प्रतिमाओं की स्थापना का उल्लेख मिलता है। विक्रम सम्वत् १२३२ वाले लेख में जैन पण्डित रत्नकीर्ति का नाम भी प्राप्त है।

ताम्रपत्र

(१) **बेटमा ताम्रपत्र** :– यह इन्दौर जिले के बेटमा नामक गांव से प्राप्त हुआ है। इसमें विक्रम सम्वत् १०७६ उत्कीर्ण है। इसके अन्दर नलतडाग नामक गांव को स्थानेश्वर (वर्तमान थानेश्वर) से आये हुये ब्राह्मण को दान स्वरूप दिये जाने का उल्लेख है। यह दान परमार राजा भोज ने दिया था। संग्रहालय के भूतपूर्व संग्राध्यक्ष श्री. डी. बी. डिसकलकर ने (एपिग्राफिया इण्डिका, वॉल्यूम १८–पृष्ठ ३२० में) इसे प्रकाशित किया है।

(२) **देपालपुर ताम्रपत्र** :– विक्रम सं. १०७९ का यह ताम्रपत्र इंदौर जिले के देपालपुर नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। मान्यखेत (आधुनिक मलखेड) से आये हुए एक ब्राह्मण को परमार राजा भोज द्वारा किरिकैका नामक गांव को दान में दिये जाने का इसमें उल्लेख है। प्रोफेसर श्री आर. जी. ओझा ने इस ताम्रलेख को (दि जनरल ऑफ इंडियन हिस्टॉरिकल, क्वार्टरली वॉल्यूम ८, पृष्ठ ३०५ में) प्रकाशित किया है।

(३) **राणा अरिसिंह का दानपत्र** :– बहुत दिनों तक यह ताम्रपत्र भूतपूर्व होल्कर राज्यकोष में रखा रहा और बाद में संग्रहालय को दिया गया। यह मेवाड़ी संस्कृत में देवनागरी वर्णमाला से लिखा हुआ सोलह पंक्तियों का लेख है। ताम्रपत्र से ज्ञात होता कि चित्तौड़ के महाराणा अरिसिंहजी ने वि. सम्वत् १८२७ को चैत्र रामनवमी के सुअवसर पर अपनी धर्म भगिनी अहिल्याबाई को विनोटा, केली, तातारमल नामक तीन गांव उपहार स्वरूप दिये थे। दान में दाता ने अपने कुलदेव एकलिंगजी की शपथ लेकर प्रस्तुत दान को चालू रखने के लिए अपने उत्तराधिकारियों को आज्ञा दी है। अब यह तीनों गांव राजस्थान के चित्तौडगढ़ जिले में हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

संग्रहालय में सुरक्षित दो अन्य ताम्रपत्र भी विशेष उल्लेखनीय है। विक्रम सं. १४३७ वाले ताम्रपत्र में महाराणा मकरसिंहजी द्वारा एक ब्राह्मण को दान में दी गई भूमिका उल्लेख है। एक अन्य ताम्रपत्र जो कि विक्रम सम्वत् १४५४ का है; महाराणा रायमलजी द्वारा राम-रतन ब्राह्मण को दिये गये एक दान का उल्लेख करता है।

ब्रिटिश म्यूजियम लन्दन में प्रदर्शित (मथुरासिंह मस्तक) की ढली हुई आकृति को भी संग्रहालय में स्थान दिया गया है। इसमें उत्कीर्ण प्राकृतलेख खरोष्ठी लिपि में है। महाक्षत्रय रंजुबुल की पटरानी एवं उसके अन्य सम्बंधियों द्वारा कुछ दानों का उल्लेख इसमें मिलता है। यह रंजुबुल मथुरा का प्रथम शताब्दी का शक शासक था।

(द) मृत्तिका पात्र

प्राचीन काल के मिट्टी के बर्तनों के टूकडे इस दीर्घा में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। यह पात्र-खण्ड अधिक संख्या में कसरावद उत्खनन से प्राप्त हुये हैं। यह उत्खनन कसरावद तहसील से तीन मील दक्षिण ईटबड़ी नामक स्थान में किया गया था। नर्मदाघाटी शोध संस्था के भूतपूर्व सचिव स्वर्गीय श्री व्ही. आर. करन्दीकर ने पुरातत्व सम्बन्धी निरीक्षण के समय इस स्थान का पता लगाया था। बाद में होल्कर राज्य की सहायता से सन् १९३३ ई. के शीतकाल में उत्खनन कार्य प्रारम्भ हुआ। परन्तु दुर्भाग्यवश कार्य पूर्ण होने के पूर्व ही करन्दीकर महोदय साहब का स्वर्गवास हो गया। बाद में तत्कालीन संग्रहाध्यक्ष श्री व्ही. एन. सिंह द्वारा १९३७–३९ ई. तक उत्खनन कार्य हुआ। परिणाम स्वरूप बुद्ध बिहारों के बहुत ही महत्वपूर्ण अवशेष प्राप्त हुए :—

कसरावद के अवशेषों को निम्नांकित विभागों में विभाजित किया गया है।

(१) गृहोपयोगी वस्तुएं एवं पात्र,
(२) ईंटें,
(३) चौके,
(४) नलिकाएं,
(५) तकलियां एवं विविध।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

(१) गृहोपयोगी वस्तुएं.—यहां पर कई प्रकार के एवं कई आकारों के मृत्तिका पात्र प्राप्त हुए हैं। जैसे—तश्तरी, कटोरे, थालियां, जलपात्र, लोटा, सुराही, घड़, मटक और संचय पात्र / पत्तो, फूल, मछली, कुक्कुट, कर्ण कुण्डल, स्वस्तिक, क्रास तथा नाना प्रकार के चिन्हों से युक्त कसरावद से प्राप्त मृत्तिका पात्र अन्दर तथा बाहर शीशे की भांति चमकते हुये हैं। इन पर बने हुय ज्यामितीय चित्र भी अत्यन्त भव्य है। कुछ गोल आकृति की वस्तुएं भी प्राप्त हैं, जिनके ऊपरी भाग में हत्ता है। यह सम्भवतः पानी के बर्तनों के ढकने के काम में आते रहे होंगे। गावदुम आकार के दो संचय कुम्भ भी उत्तम अवस्था में प्राप्त हुए हैं। जिनमें से एक ४'-३½" ऊंचा तथा ५'-९" परिधि का है। दूसरा जिसका ऊपरी भाग अप्राप्त है, २'-४" ऊंचा तथा ४'-५" की परिधि का है।

(२) ईंटें.—उत्खनन में ईंटें प्रायः १'-८"×११"×४" के आकार की बहुतायत से प्राप्त हुई हैं। कुछ ईंटें विभिन्न प्रकार के चिन्हों से अंकित हैं। इस प्रकार की ईंटें, महेश्वर, माथलय, सामेड़ा, कायथा, गौतमपुरा, सामनेरा और सेन्धवा में भी प्राप्त हुई हैं। मोहिन्जोदड़ो के उत्खनन के समान कुछ त्रिभुजाकार ईंटें यहां भी प्राप्त हुई हैं।

(३) चौकें.—उज्जैन उत्खनन में प्राप्त चौकों के समान १'-२"×७" आकार के कुछ चौके यहां भी प्राप्त हुये हैं।

(४) नलिकाएं.—उत्खनन में कुछ गावदुम आकार की नलिकाएं (ड्रेनपाइप्स) भी प्राप्त हुई हैं। इनपर बाहर की ओर छोटे गोल कंकण बने हुए हैं। नलिकाओं का व्यास १'-५" है परन्तु दुर्भाग्यवश एक भी पूर्ण नलिका प्राप्त नहीं हुई है।

(५) तकलियाँ एवं विविध वस्तुएं.—मध्य में एक छिद्र से युक्त तकलियां यहां अधिक संख्या में प्राप्त हुई हैं।

कुछ छिद्र पूर्ण नमूने भी प्राप्त हुये हैं। यह सम्भवतः दिये रखने अथवा अगरबत्ती जलाने के काम आते रहे होंगे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

यह तोपें जो कि मुगलों की सम्पत्ति थी इन्दौर में होल्कर राज्य के संस्थापक मल्हारराव होलकर द्वारा १७६५ ई. में दिल्ली पर हुये मराठा अभियान के अवसर पर प्राप्त की गई थीं। मल्हारराव होलकर द्वारा १० फरवरी, १७६५ ई. में अहिल्याबाई को लिखे गये पत्र में दिल्ली से चार बड़ी तोपें भेजने का उल्लेख है।

संग्रहालय में संग्रहीत दो तोपें लैटिन अक्षरों म उत्कीर्ण हैं। इसमें से एक जो कि ६'–३$\frac{१}{४}$" लम्बी तथा ३" व्यास के मुंहवाली है, उस पर "एन्नो १६५३ लैम्बर्ट बारगेरिक मेफीसिट डन्कर्क" तथा दूसरी तोप जो ३'–५" लम्बी तथा २$\frac{१}{२}$" व्यास मुख मुखवाली है "१६७३ बटाविया" उत्कीर्ण है। साथ में एक स्वस्तिक चिन्ह भी बना है। यह दोनों तोपें यूरोपीय तोप बानानेवालों द्वारा निर्मित की गई रही होंगी। इससे यह प्रतीत होता है कि शायद यह तोपें ६ मार्च, १७३९ ई. में बसेन के निकटवर्ती धार्वी दुर्ग को पुर्तगालियों से छीनने के अवसर पर मल्हारराव होलकर को लूट के हिस्से के रूप में मिली रही होंगी। यह सर्व विदित है कि मल्हारराव होलकर इस अभियान का प्रमुख सेनानी था।

एक दूसरी तोप ४'-२" लम्बी तथा ३" व्यास के मुंह की है जिस पर अस्पष्ट देवनागरी वर्णमाता में लेख है। इसमें विक्रम सम्वत् १७८७ तथा सारंगधर नाम खुदा है दूसरी तोप जो कि ५'–६" लम्बी और २$\frac{१}{२}$" व्यास के मुंहवाली है उस पर झाबुवा के राजा महाराव श्री शिवसिंह जी का नाम तथा विक्रम सम्वत् १८१२ खुदा हुआ है। तोप पर एक हाथी का चित्र है और मुंह पर एक नर आकृति बनी हुई है। झाबुआ बहुत दिनों तक होलकर राज्यान्तर्गत रहा है। अस्तु या तो यह तोप मल्हारराव होलकर को महाराजा झाबुआ द्वारा दी गई रही होगी या फिर मल्हारराव या उसके बाद के राजाओं द्वारा छीनी गई रही होगी।

एक अन्य तोप पर एक त्रिशूल का चिन्ह है। उस पर विक्रम संवत् १६८० भी खुदा हुआ है। इसमें महाराजा श्री रघुनाथसिंहजी का नाम तथा बनानेवाले केशवराम का नाम खुदा हुआ है। यह अहमदाबाद का निवासी था। तोप का नाम 'कडक बिजली' लिखा हुआ है। एक अन्य तोप पर वृत्ताकार आकृति में शासक का निवास स्थान भानपुरा एवं हिजरी संवत् १२०८ उत्कीर्ण है। तोप का नाम 'नानकाब' है एवं फारसी भाषा में "महाराजाधिराज आलिजाह यशवन्तराव होलकर सुभेदार बहादुर नसरत जंग" भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

उत्कीर्ण है । एक अन्य छोटी पीतल की तोप पर भी फारसी भाषा में "बहलकरनाल, बेहतमान, राजाराम पसंद महाराजा तोपसक्ता इन्दौर १२४० हिजरी" उत्कीर्ण है। कुछ तोपों पर 'फते मंसूर' 'तोतारामजी' 'जमुना' गुर्द' इत्यादि शब्द खुदे हुये हैं।

रायफलें भी कई प्रकार की हैं। उनमें से कुछ में १७९७, १८०५ से १८६१ ई. तथा कुछ एक में १९२९, ३०, ३२ एवं १९३७ विक्रम सम्वत् उत्कीर्ण है। कुछ राछ रायफलों पर 'होलकर स्टेट' या 'अलीगोल शब्द उत्कीर्ण हैं।

ललित कला विभाग

ललित कला दीर्घा में मुख्य रूप से चित्र एवं संगमरमर की मूर्तियां हैं। चित्र अधिकांश रूप से संग्रहालय को भेंट स्वरूप प्राप्त हुये हैं। सन् १९३७ व सन् १९४१ में भूतपूर्व होल्कर राज्य के गृह विभाग ने भी कुछ चित्र संग्रहालय को दिये हैं। उनमें से अधिकांश तैलचित्र हैं या प्राचीन यूरोपीय चित्रों की अनुकृति है। कुछ भारतीय चित्रकारों में से रानडा ऊकील तथा स्थानीय कलाकार श्री रामचन्द्रराव के भी चित्र इस संग्रहालय को भेंट स्वरूप प्राप्त हुये हैं।

नाना भुजंग का 'मदन तथा रति' का चित्र अत्यन्त सुन्दर है। इसका आकार २'--११'X२'--२" है। राजपूत शैली के एक अन्य चित्र में (२'--६"X१'--१०") राजकुमार छेलबताऊ तथा महनारानी को बहुत ही आकर्षक ढंग से चित्रित किया गया है। कढ़ाई के कामों में स्थानीय कलाकार चम्पुताई द्वारा निर्मित २'-६"×२'-२" आकार की एक मानव आकृति भी दर्शनीय है।

गृह विभाग से प्राप्त तैलचित्र विविध आकारों के हैं एवं बहुमूल्य हैं। उनमें से अधिकांशतः प्राकृतिक दृश्य--जंगलों के दृश्य, यूरोप की नदियों एवं नगरों के चित्र हैं। यह चित्र श्री एफ० पिस्को, ई० बोहेम, बी० डब्ल्य० ल्यूडर, डैविड, फर्कियर्सन (१८९२) ऑलीवर, ए० आर० अल्हरो, ए० एक्काओ, एस० एस० जेन्टेन्टेन, ए० बैलारेट, एन० सी० डिके, तथा सी० हार्वे के हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

इसी विभाग में "दि लेटर बेग" २'–३"×३'–१" आकार का एक अज्ञात कलाकार द्वारा निर्मित तथा श्री जेम्स नॉकीस द्वारा बनाया हुआ २'–८"×३'–२" के आकार का "शिमला फ्राम लेन्डस डाउन हाउस" एवं श्री पैलेरो का "ला शेवेल्योर डी बेरेनिस" चित्र अत्यन्त ही सुन्दर हैं।

एक इटालियन चित्र 'वियोग दृश्य' जिसका आकार ७'–५"×७'–११" है, भी एक सुन्दरतम चित्रों में से है

तीन दरबार चित्र भी उल्लेखनीय हैं। उनमें से एक २'–७"×२'–३" के आकार का उदयपुर के महाराणा स्वरूपसिंह के दरबार का है। उसमें महाराणा सहित चौबीस व्यक्तियों को सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है। चार अंग्रेज अधिकारी भी भारतीय प्रथा के अनुसार नीले वस्त्रों से विभूषित बैठे हुये सुन्दरता के साथ चित्रित किये गये हैं। कलाकार का नाम तो अज्ञात है परन्तु दरबार के व्यक्तियों के नाम चित्र के पृष्ठ भाग में देवनागरी लिपि में लिखे हुये हैं।

दूसरा दृष्य ३½'×३' के आकार का ग्वालियर के महाराजा जयाजीराव सिंधिया का है। यह चित्र २० मार्च, १८९३ ई. को उज्जैन के तत्कालीन कलाकार इमामबक्स द्वारा बनाया गया है। गणेशोत्सव के उपलक्ष में सजाये गये दरबार में महाराजा सहित १२० व्यक्तियों को बड़े मनमोहक रूप से चित्रित किया गया है। व्यक्तियों के नाम मोड़ी तथा उर्दू अक्षरों में चित्रों के साथ ही अंकित हैं।

दरबार का अन्य तीसरा चित्र ४'–४"×३'–६" के आकार का भोपाल की सिकन्दर बेगम का है। चित्र में चित्रकार श्री भेरूलाल मुसावर ने बेगम के मण्डप में अंग्रेज गवर्नर जनरल श्री राबर्ट हेमिल्टन के आगमन को चित्रित किया है।

एक नक्काशी पूर्ण पात्र में तीन दृश्यों को कलात्मक ढंग से दिखलाया गया है। एक में टीपू सुलतान के दो पुत्र एक अंग्रेज अधिकारी कर्नल बेलेजली से भेंट करते हुवे बताए गये हैं। दूसरे में तत्कालिन भारतीय गवर्नर जनरल लार्ड मॉर्निग्टन के दरबार के दृश्य को चित्रित किया गया है। तीसरे दृश्य में बहुत से व्यक्तियों के मध्य में शंकराचार्य को बड़े ही चित्ताकर्षक ढंग से दर्शाया गया है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate IX

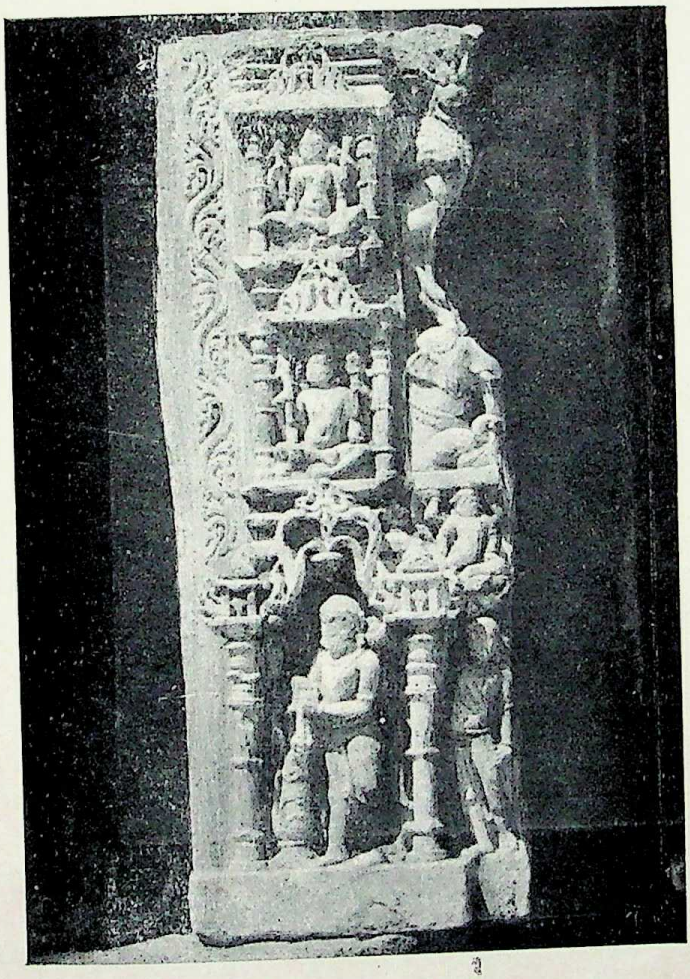

मंदिर द्वारका चौखट (इन्दौर)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate X

कल्पवृक्ष (मोड़ी)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate XI

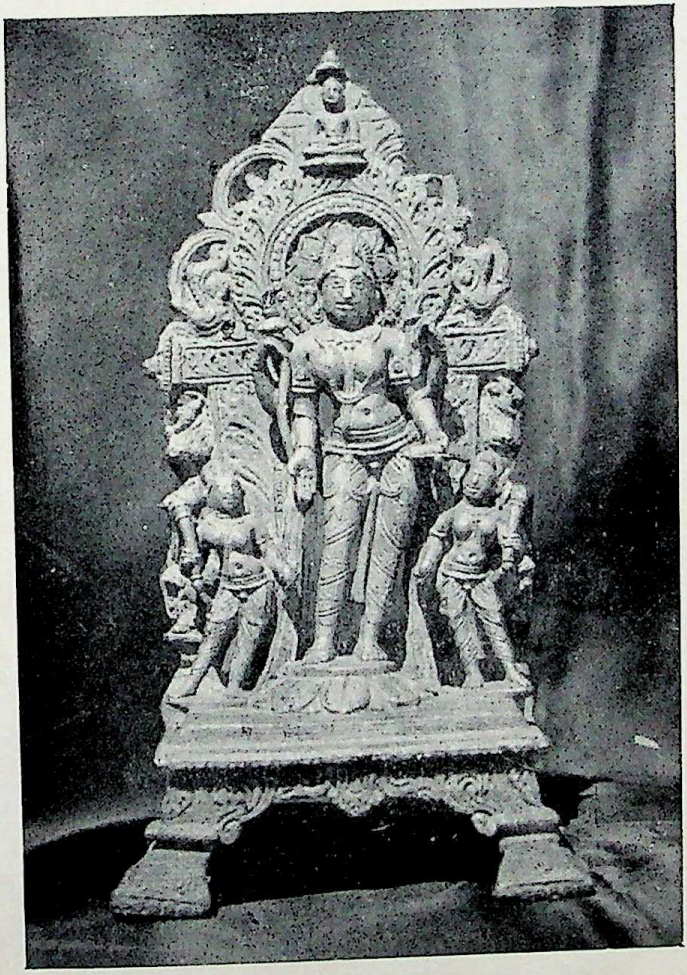

श्रुतदेवी (धातु)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate XII

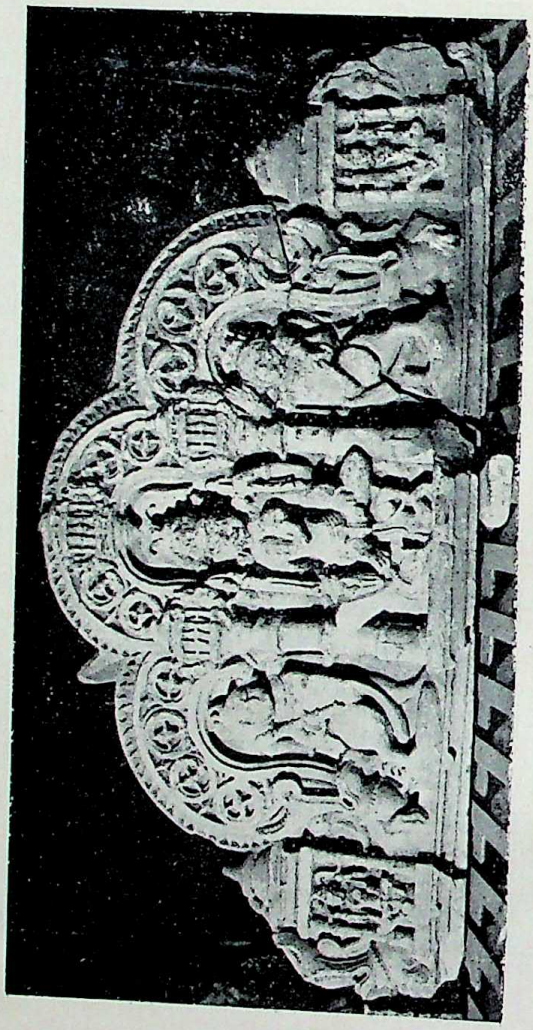

मनोवेगा (मोड़ी)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate XIII

मिट्टी के गृहपयोगी पात्र (कसरावद)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Plate XIV

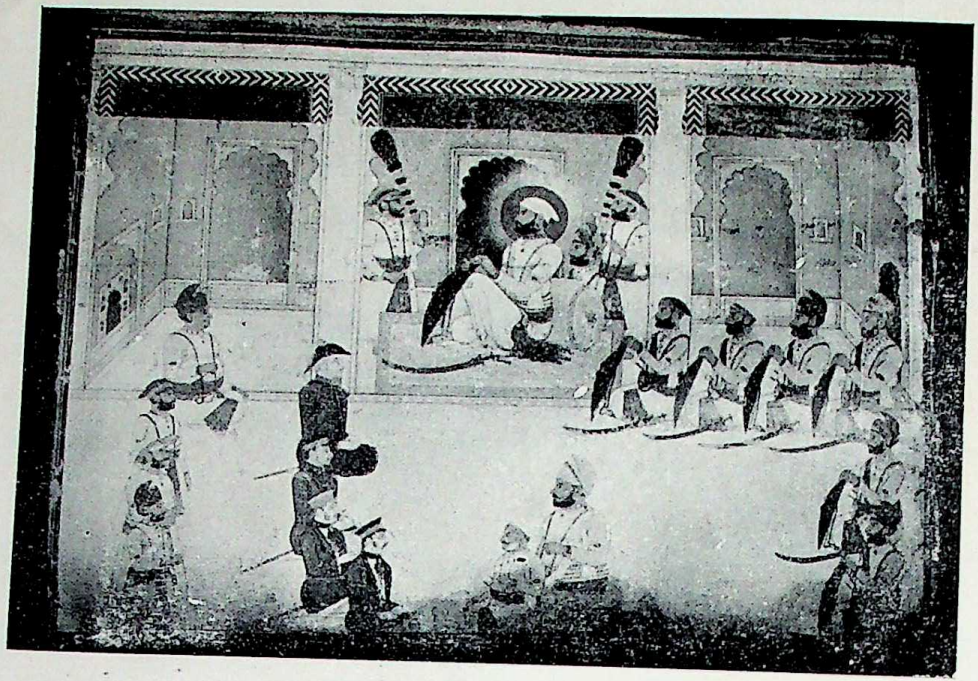

उदयपुर दरबार

Plate XV

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate XV

ग्वालियर का गणेशोत्सव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

Plate XVI

भोपाल दरबार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

संग्रहालय म संगमरमर की कुछ मूर्तियां स्तम्भ तथा चीनी मिट्टी के कुछ पात्र बडे ही सुन्दर हैं। इनमें इटली, चीन, तथा भारतीय कला बड़ी ही सुन्दर बन पड़ी है। कुछ दिन पूर्व ही मध्यप्रदेश सरकार के आदेशानुसार सर राबर्ट हेमिल्टन की विशालकाय प्रतिमा भी संग्रहालय को प्राप्त हो चुकी है।

विविध :- प्राणिशास्त्र, नृवंश, उद्योग-व्यापार तथा शिक्षा सम्बन्धी वस्तुओं को इसके अन्तर्गत माना जाता है।

प्राणिशास्त्र :- इस दीर्घा में कुल १३७ नमूनें हैं। जिनमें से १३२ पक्षी हैं। यह पक्षी "बाम्बे नेचरल हिस्ट्री सोसाइटी" के तत्वावधान में होलकर राज्यान्तर्गत हुये पक्षी अनुसंधान के अवसरपर संग्रहालय को प्राप्त हुये हैं। इस दीर्घा में एक पपीता जिसकी आकृति बतख जैसी है, एक मृतकाय सांप, सनफिश (मछली) तथा शुतुरमुर्ग का अंडा मुख्य दर्शनीय वस्तुओं में से हैं। इस विभाग के अन्तर्गत कुछ अन्य वस्तुएं भी दर्शनीय हैं। जैसे- ऐसे पाषाण खण्ड जिनपर वनस्पतियों ने अपने चिन्ह छोड़ दिये हैं। प्रस्तुत दीर्घा में चाक (खड़िया) मिट्टी, लाल बलुये रंग के पत्थर का चूरा अभ्रक बिल्लौर, कैलशाइट, गंधक ग्रेनाईट, बौसाईट आदि खनिज महत्वपूर्ण हैं।

नृवंश शास्त्र :-इस विभाग में विविध प्रकार के पश करनेवाले पुरुषों की कलईदार मूर्तियां हैं। जैसे- भृत्य, भंगी, खानसामा, साधू, फकीर, और भिखारी आदि। इसी प्रकार कई प्रकार के आभूषण जैसे- बोर, अंगूठी, कुडी एवं नथ इत्यादि भी दर्शनीय हैं।

उद्योग एवं व्यवसाय :- इसके अन्तर्गत कृषि उपज की वस्तुओं में गेहूं, ज्वार, मूंगफली, जापान-स्पेन-अमेरिका-कम्बोडिया तथा भारतीय रूई के बिनौले (बीज) एवं वन सम्पत्ति में विविध प्रकार की लकड़ियां-- सीसम बबूल नीम, जामुन, टीक तथा बांस आदि भी संग्रहालय में हैं।

शिक्षा :-शिक्षा सम्बन्धी वस्तुओं में लकड़ी तथा धातु निर्मित अनेकों कृतियाँ हैं। जिनमें पक्षपक्षी, फलफूल, शाकभाजी तथा नक्शे प्रमुख हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

विविध दीर्घा में जनरुचि सम्बन्धी अनेकों वस्तुओं का संग्रह है। नवीन संगहालय भवन के निर्माण के बाद इन विभागों का विकास किया जावेगा।

नररत्न मंदिर

सन् १९२३ ई. में तत्कालीन होलकर राज्य के शिक्षा आयुक्त स्वर्गीय श्री जी. एस. अरुण्डेल ने नररत्न मंदिर की स्थापना की। धर्म, जाति अथवा रंग से विरहित विश्व की महान आत्माओं के चित्रों का संग्रह करना इस संस्था का उद्देश्य था। संस्था के अन्तर्गत एक पुस्तकालय भी है जिसमें महान आत्माओं के आत्मचरित्र एवं जीवन वृत्तान्त से सम्बन्धित पुस्तकें हैं। स्थानीय संस्थाओं के छात्र-छात्राओं के भविष्य के निर्माण के लिए महान् आत्माओं के जीवन एवं कार्यों पर इस संस्था के द्वारा व्याख्यान आयोजित किये जाते थे। सन् १९३१ ई. म इस संस्था को संग्रहालय में विलीन कर दिया गया। उस समय से दोनो संस्थाएं एक ही भवन में स्थित है।

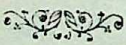

शाप्रामुई-१७८४-१ह-५-६१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS

इन्दौर
शासन प्रादेशिक मुद्रणालय
१९६१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow